सांई बनि कैसे लागे पार
नैया पड़ी मंझधार सांई बनि कैसे लागे पार~~~

साहबि तुम मत भूलयिो लाख लो भूलग जाये,
हम से तुमरे और हैं तुम सा हमरा नाहि~~
अंतरयामी एक तुम आतम के आधार,
जो तुम छोड़ो हाथ सांईजी कौन उतारे पार~~
सांई बनि कैसे लागे पार~~~

मैन अपराधी जन्म को मन में भरा वकिार,
तुम दाता दुख भंजन मेरी करो सम्हार~~
अवगुन दास कबीर के बहुत गरीब नविाज़,
जो मैं पूत कपूत हूं कहौं पिता की लाज~~
सांई बनि कैसे लागे पार~~~